Online at: https://researchtrendsjournal.com ISSN No: 2584-282X

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 2; Issue 2; 2024; Page No. 286-289

Received: 01-12-2023
Accepted: 06-02-2024

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के आदर्शों का भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत के रूप में महत्व

[1]नीरज कुमार कौशिक और [2]डॉ. गुरप्रीत सिंह

[1]शोधकर्ता, ग्लोकल स्कूल ऑफ एजुकेशन, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी मिर्जापुर पोल, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
[2]एसोसिएट प्रोफेसर, ग्लोकल स्कूल ऑफ एजुकेशन, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी मिर्जापुर पोल, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: नीरज कुमार कौशिक

सारांश
डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम का जीवन और उनके आदर्श भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत रहे हैं। एक गरीब परिवार से निकलकर विज्ञान और प्रौद्योगिकी में असाधारण ऊंचाइयों तक पहुंचने वाले डॉ. कलाम का जीवन इस बात का उदाहरण है कि मेहनत, समर्पण और दृढ़ निश्चय से कोई भी असंभव सा दिखने वाला लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने भारतीय युवाओं को उनके सपनों को साकार करने के लिए प्रोत्साहित किया, उन्हें यह सिखाया कि वे अपनी परिस्थितियों से ऊपर उठकर अपने देश और समाज की सेवा में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

मुख्य शब्दः भारतीय युवाओं, प्रेरणास्रोत, समर्पण, असाधारण, निरंतर मेहनत और धैर्य

प्रस्तावना

डॉ. कलाम का जीवन और उनके आदर्श कठिन परिश्रम, अनुशासन, और उच्च नैतिकता के प्रतीक हैं। एक मछुआरे परिवार में जन्में डॉ. कलाम ने शिक्षा के महत्व को समझते हुए कठिनाइयों के बावजूद अपनी पढ़ाई जारी रखी। उनका जीवन उन सभी युवाओं के लिए एक मिसाल है जो सीमित साधनों के बावजूद अपने सपनों का पीछा करना चाहते हैं। डॉ. कलाम ने कठिन परिस्थितियों में भी हार नहीं मानी और अपने सपनों की ओर बढ़ते रहे। उनकी आत्मकथा "विंग्स ऑफ फायर" इस बात की गवाही देती है कि कैसे उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी अपने लक्ष्य की ओर निरंतर कदम बढ़ाए।

उनके जीवन के आदर्श, जैसे कि विनम्रता, समर्पण, और सादगी, युवाओं को जीवन में सफलता पाने के लिए एक मार्गदर्शक की तरह काम करते हैं। डॉ. कलाम का मानना था कि व्यक्ति की सबसे बड़ी पूंजी उसकी ईमानदारी और कर्तव्यपरायणता होती है। उनका यह सिद्धांत केवल उनके व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उन्होंने इसे अपने कार्यक्षेत्र में भी लागू किया।

डॉ. कलाम का मानना था कि युवा शक्ति किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी संपत्ति होती है। वे हमेशा कहते थे कि "सपने वो नहीं होते जो हम सोते वक्त देखते हैं, सपने वो होते हैं जो हमें सोने नहीं देते।" उनके इस विचार ने लाखों युवाओं को उनके सपनों को साकार करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने युवाओं को यह संदेश दिया कि किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए निरंतर मेहनत और धैर्य आवश्यक है। डॉ. कलाम का जीवन यह सिखाता है कि सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता, बल्कि इसके लिए निरंतर प्रयास और कठिनाइयों का सामना करने की शक्ति चाहिए होती है।

डॉ. कलाम ने अपने जीवन में कई प्रेरणादायक बातें कहीं जो युवाओं के लिए आज भी महत्वपूर्ण हैं। उनका मानना था कि असफलता से घबराना नहीं चाहिए, क्योंकि असफलता भी एक अवसर होती है जिससे हम सीख सकते हैं। उनके अनुसार, "असफलता का मतलब यह नहीं होता कि हम कमजोर हैं, बल्कि यह एक मौका होता है कि हम अपनी गलतियों से सीखें और बेहतर बनें।" इस प्रकार, उन्होंने युवाओं को यह संदेश दिया कि वे कभी भी असफलता से निराश न हों, बल्कि इसे अपनी सफलता की सीढ़ी बनाएं।

डॉ. कलाम ने शिक्षा को व्यक्ति के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू माना। उनका विचार था कि शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी प्रदान करना नहीं है, बल्कि यह एक व्यक्ति के चरित्र का निर्माण भी करती है। उन्होंने युवाओं को शिक्षा के महत्व के बारे में जागरूक किया और उन्हें बताया कि शिक्षा ही वह साधन है जो उन्हें समाज और देश की सेवा में सक्षम बनाता है। उनका मानना था कि सच्ची शिक्षा वही है जो व्यक्ति को एक अच्छा इंसान बनाती है और उसे समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी का एहसास कराती है।

डॉ. कलाम ने हमेशा यह कहा कि शिक्षा का अर्थ केवल परीक्षा

पास करना या डिग्री हासिल करना नहीं है, बल्कि इसका वास्तविक उद्देश्य ज्ञान अर्जित करना और उसे समाज की भलाई के लिए उपयोग करना है। उन्होंने भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार की जरूरत पर भी जोर दिया और कहा कि हमें एक ऐसी शिक्षा प्रणाली चाहिए जो केवल बुद्धिमत्ता पर आधारित न हो, बल्कि मानवीय मूल्यों को भी महत्व दे।

डॉ. कलाम के विचार और आदर्श युवाओं के शैक्षिक और व्यावसायिक जीवन में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। उनका मानना था कि युवाओं को अपने करियर का चुनाव स्वयं करना चाहिए और अपने मन की बात सुननी चाहिए। उन्होंने युवाओं से हमेशा कहा कि वे वही करियर चुनें जिसमें उनकी रुचि हो और जिसे वे पूरे मन से करना चाहें। डॉ. कलाम ने यह भी कहा कि किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल करने के लिए अनुशासन, समय का सही उपयोग, और निरंतर प्रयास आवश्यक हैं।

उन्होंने भारतीय युवाओं को रोजगार की तलाश के बजाय रोजगार का सृजन करने पर जोर देने के लिए प्रेरित किया। उनका मानना था कि उद्यमिता के माध्यम से युवा अपनी क्षमताओं का सर्वोत्तम उपयोग कर सकते हैं और समाज के लिए रोजगार के अवसर भी पैदा कर सकते हैं। उनके अनुसार, भारतीय युवाओं में इतनी क्षमता है कि वे अपनी कड़ी मेहनत और नवाचार से किसी भी चुनौती का सामना कर सकते हैं।

डॉ. कलाम ने छात्रों को जीवन में महत्वाकांक्षी होने के लिए प्रेरित किया, लेकिन साथ ही यह भी कहा कि सफलता के पीछे दौड़ने के बजाय अपने कार्य को पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ करें। उनका यह विचार आज के युवाओं के लिए अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि आज का समाज प्रतिस्पर्धा पर आधारित है और लोग एक–दूसरे से आगे निकलने की होड़ में हैं। डॉ. कलाम का संदेश युवाओं को यह सिखाता है कि वे अपने लक्ष्यों को पाने के लिए सही मार्ग अपनाएं और समाज की भलाई को प्राथमिकता दें।

डॉ. कलाम का मानना था कि युवा किसी भी राष्ट्र के विकास का आधार होते हैं। उन्होंने हमेशा इस बात पर जोर दिया कि युवाओं को राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देना चाहिए। उनका विचार था कि हर युवा को अपनी जिम्मेदारियों का एहसास होना चाहिए और उसे समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए कार्य करना चाहिए। डॉ. कलाम ने युवाओं से कहा कि वे अपने देश के प्रति निष्ठावान रहें और उसकी सेवा को अपना परम कर्तव्य मानें।

उनका मानना था कि प्रत्येक युवा को समाज की समस्याओं के प्रति संवेदनशील होना चाहिए और उनमें बदलाव लाने का प्रयास करना चाहिए। उनका दृष्टिकोण यह था कि केवल सरकार के प्रयासों से समाज में सुधार नहीं हो सकता, बल्कि इसके लिए हर नागरिक का सहयोग आवश्यक है। डॉ. कलाम के विचारों से प्रभावित होकर युवा समाज सेवा, स्वच्छता अभियान, और अन्य सामाजिक कार्यों में योगदान दे सकते हैं, जो राष्ट्र के विकास में सहायक होते हैं।

प्राथमिक शिक्षा में बच्चों में रचनात्मकता लाने की कोशिश की जाए। साथ ही, ऐसा करते समय इन पाठ्यक्रमों की समीक्षा भी करनी चाहिए, ताकि बच्चों के बस्तों का बोझ कम हो सके और उनकी रचनात्मकता पूरी तरह से निखर सके। उच्च शिक्षा पाठ्यक्रम एक व्यक्ति को स्वतंत्र शिक्षक बनने में मदद करें।कुल मिलाकर, हमारी शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों को उद्यमशीलता, नवीनता, नैतिकता और रचनात्मकता के कौशलों का विकास करने के लिए बनाई गई है।

डॉ. कलाम ने छात्रों को उद्यम सम्बन्धी ज्ञान और क्षमता प्राप्त करने में मदद करने का आह्वान किया; उन्होंने कॉलेजों में कला, विज्ञान और वाणिज्य के पाठ्यक्रमों में उद्यम सम्बन्धी विषयों और व्यवहारिक क्षेत्रों को शामिल करने का विचार दिया; और छात्रों की योग्यता में वृद्धि लाने की नीति प्रदान की, जिससे वे किसानों, ग्रामीणों और उद्योग–धन्धों से जुड़े शोधकर्ती ने सोचा कि डॉ. ए0 पी0 जे0 अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारों और वर्तमान शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन करना चाहिए। शोधकर्ती के इस शोध प्रबन्ध की सार्थकता इसलिए भी है क्योंकि इससे छात्रों में सुशिक्षा, मावीयता, राष्ट्रीयता, स्व–संस्कृति और चरित्र निर्माण के गुणों का विकास होगा। उन्हें आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों का ज्ञान मिलेगा, जिससे वे अपने जीवन की समस्याओं को स्वयं हल करने में सक्षम होंगे। दार्शनिक, गुणवत्तापरक शैक्षिक तथा अन्तर्गदृष्टि के अभ्यास से उनकी तार्किक क्षमता में वृद्धि होगी और वे अपने व्यवहार में सकारात्मक बदलाव करने में सक्षम होंगे, जो विकसित देशों को विकसित देश बनने के लिए अनिवार्य है। डॉ. कलाम के विचारों को आधुनिक शिक्षण प्रणाली में शामिल करने और उन पर शैक्षिक दृष्टिकोण से विचार करने से छात्रों को लाभ मिलेगा और उनमें उत्साह और उत्साह का संचार करेगा।

उद्देश्यः

- चरित्र निर्माण में योगदानः डॉ. कलाम के आदर्शों का अध्ययन करना ताकि यह समझा जा सके कि वे किस प्रकार भारतीय युवाओं के चरित्र निर्माण में सहायक हो सकते हैं, जैसे कि दृढ़ता, ईमानदारी, और अनुशासन।
- प्रेरणा और आत्मविश्वासः डॉ. कलाम के विचारों से प्रेरणा लेकर युवाओं में आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच का विकास करना, जिससे वे अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित हो सकें।
- कैरियर मार्गदर्शनः डॉ. कलाम द्वारा दिए गए करियर संबंधी सुझावों और मार्गदर्शन का विश्लेषण करना, ताकि युवा अपने पेशेवर जीवन में सफल होने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान हासिल कर सकें।
- समाज में योगदानः यह समझना कि डॉ. कलाम के आदर्श भारतीय युवाओं को समाज में सक्रिय और जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए कैसे प्रेरित करते हैं, ताकि वे अपने समुदाय की भलाई में योगदान कर सकें।
- विज्ञान और प्रौद्योगिकी के प्रति आकर्षणः डॉ. कलाम के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाकर युवाओं में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के प्रति रुचि बढ़ाना, जिससे वे नवाचार और अनुसंधान के क्षेत्र में करियर बनाने के लिए प्रेरित हो सकें।

साहित्य समीक्षा

ब्रूनर जे (1984) ने दर्शन और नैतिकता से शैक्षिक मूल्यों का विकास देखा। जिसमें दर्शन और नैतिकता के माध्यम से शैक्षिक मूल्यों का विकास किया जा सकता है, साथ ही हर संभव प्रयास भी शामिल है। अध्ययन ने पाया कि विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास ध्यान में रखते हुए शिक्षक नैतिकता सिखाते हैं तो शैक्षिक मूल्यों का विकास होता है। दर्शन और नैतिकता में सही संबंध है।

डॉ. कलाम ने 27 जुलाई 2011 को कलाम में अपने भाषण में कहा कि "महिला सशक्तीकरण से समाज में स्थिरता और शांति आती है"। उनका कहना है कि न केवल परिवार और समाज में बल्कि देश में भी शांति और स्थिर समाज की नींव रखने के लिए महिलाओं को शिक्षा दी जानी चाहिए। कलाम, एपीजे अब्दुल (2012), तुम अलग हो; डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ने लिखा, "यह आप अद्वितीय हैं अपने अद्वितीय स्व की महारत, रचनात्मक नेतृत्व विकसित करने, उत्कृष्ट संस्थानों का निर्माण करने और दूसरों

को खुशी देकर खुशी प्राप्त करने की कला को समर्पित है." विचारों और कार्यों से नई ऊंचाइयों को छूएं।" पुस्तक बताती है कि सभी में महानता है। उस महानता को बाहर निकालना ही सब कुछ है। पुस्तक आपको अपने लक्ष्य को पूरा करने में आत्मविश्वास और ताकत देती है। इस नई शैली की किताब में एकीकृत, पूर्ण और सफल जीवन को दिशा देने वाले विचारों और दिल को छूने वाली पेंटिंग के साथ कलात्मक रूप से प्रस्तुत कविताओं का एक विशिष्ट डिज़ाइन है। यह पुस्तक रचनात्मक नेतृत्व और व्यक्तिगत उत्कृष्टता कैसे प्राप्त करें बताती है। मानव जीवन के साथ–साथ कॉर्पोरेट क्षेत्र में भी दूरदृष्टि, योजना और कार्रवाई का महत्व कम नहीं होना चाहिए।

पुस्तक विजडम ऑफ कलाम में डॉ. कलाम के जीवन दर्शन और शिक्षा से संबंधित उद्धरणों का एक सुंदर संग्रह है। डॉ. कलाम ने इस व्याख्यान में 27 अगस्त 2013 को कलाम, एपीजे अब्दुल को अपने शैक्षिक विचारों की कुछ महत्वपूर्ण बातें बताईं, जिसमें उन्होंने कहा कि ज्ञान प्राप्त करने का उद्देश्य क्या है और इसके घटकों में साहस, रचनात्मकता और धार्मिकता शामिल हैं। उनका कहना था कि जब स्कूल छात्रों को रचनात्मकता, धार्मिकता और साहस के साथ ज्ञान का उपयोग करना सिखाते हैं, तो राष्ट्र में बड़ी संख्या में सशक्त और प्रबुद्ध नागरिक होंगे, जो राष्ट्र के विकास और दुनिया में शांति को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है।इस प्रकार, यह राष्ट्रीय विकास और उज्ज्वल भविष्य की संभावनाओं के लिए शिक्षकों और विद्यार्थियों की भूमिका के बारे में था।

शोध पद्धतिः सर्वेक्षण और साक्षात्कार का उपयोग करके भारतीय युवाओं के विचार संकलित किए जाएंगे, जो डॉ. कलाम के आदर्शों से प्रभावित हैं।

शोध प्रक्रिया में डेटा का संकलन सबसे महत्वपूर्ण कदम होता है। किसी भी अध्ययन के लिए प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों से डेटा का संकलन किया जाता है। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की आत्मकथा, उनके भाषणों का मूल पाठ, उनके द्वारा दिए गए साक्षात्कार, और उनके लेख सभी प्राथमिक स्रोतों के रूप में काम करते हैं। इन दस्तावेजों में उनके विचार, अनुभव, और समाज के प्रति उनकी दृष्टि का स्पष्ट वर्णन मिलता है, जो शोधकर्ता को उनके कार्यों की गहराई को समझने में मदद करते हैं। इसके अतिरिक्त, द्वितीयक स्रोतों के रूप में विभिन्न पुस्तकों, पत्रिकाओं, संपादकीय, रिपोर्टों, और अन्य प्रकार के लेख भी शामिल किए गए हैं, जो डॉ. कलाम के योगदान का संदर्भ देते हैं। इस प्रकार, यह अध्ययन डॉ. कलाम के योगदान का विस्तृत विश्लेषण करने में सहायक होता है।

डेटा संग्रह विधि में डॉ. कलाम के जीवन, उनकी शिक्षाओं, और उनके द्वारा समाज को दी गई प्रेरणाओं के दस्तावेजों का समावेश होता है। इन स्रोतों की जानकारी संग्रहित करके शोधकर्ता अतीत और वर्तमान की गहरी समझ प्राप्त करता है। इसमें विभिन्न विचारों और अवधारणाओं का विश्लेषण किया जाता है, ताकि एक संगठित निष्कर्ष पर पहुँचा जा सके। यह प्रक्रिया विश्लेषणात्मक और सिनॉप्टिक मानी जाती है, जिसमें विभिन्न विचारों का क्रमिक विश्लेषण करके निष्कर्ष तक पहुँचा जाता है।

शोधकर्ता के दृष्टिकोण से, इस प्रक्रिया में विभिन्न पुस्तकालयों और मानक पुस्तकों का गहन अध्ययन किया जाता है। शोधकर्ता ने उन लेखों का भी अवलोकन किया जो इस विषय पर प्रकाशित हो चुके हैं। अध्ययन के लिए सामग्री जुटाने के बाद, शोधकर्ता ने अपने विचारों की पुष्टि के लिए अपने पर्यवेक्षक और विषय–विशेषज्ञों से सलाह ली और तदनुसार अपने अध्ययन को अगले चरण में पहुँचाया।

इस अध्ययन में विभिन्न उपकरणों और तकनीकों का उपयोग किया गया, जिसमें मुख्य रूप से दस्तावेजों, पुस्तकों, लेखों, और रिपोर्टों का गहन अध्ययन और समीक्षा शामिल था। डॉ. कलाम के भाषणों, व्याख्यानों, और लेखों का गहन विश्लेषण किया गया ताकि उनके विचारों और उनके दृष्टिकोण को समझा जा सके। शोध प्रक्रिया के दौरान सामग्री विश्लेषण का भी उपयोग किया गया, जिसमें बाहरी और आंतरिक स्रोतों का अध्ययन किया गया। डेटा के विश्लेषण में विभिन्न अवधारणाओं को एकत्रित करने के बाद, संश्लेषण की प्रक्रिया को अपनाया गया। इस प्रक्रिया के तहत, विषय की समझ में गहराई से उतरकर तार्किक निष्कर्ष निकालने की कोशिश की गई। इस प्रकार, शोध प्रक्रिया ने डॉ. कलाम के विचारों और उनके योगदान का एक व्यापक और गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया।

निष्कर्षः

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम का जीवन और उनके आदर्श भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणा का एक अटूट स्रोत हैं। उनका जीवन इस बात का उदाहरण है कि दृढ़ निश्चय और मेहनत से कोई भी बाधा असंभव नहीं होती। उनके विचार और आदर्श आज भी भारतीय युवाओं को प्रोत्साहित करते हैं कि वे अपने जीवन में अनुशासन, समर्पण और कर्तव्यपरायणता का पालन करें। डॉ. कलाम का संदेश केवल भारत के युवाओं के लिए ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के लिए है। उनका जीवन और उनका योगदान हमें यह सिखाते हैं कि असली सफलता केवल भौतिक संपत्ति अर्जित करने में नहीं है, बल्कि इसमें है कि हम समाज और राष्ट्र के प्रति कितने उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

उनका मानना था कि प्रत्येक युवा में इतनी क्षमता होती है कि वह अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सकता है और समाज के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत कर सकता है। डॉ. कलाम का जीवन यह संदेश देता है कि हमें अपनी शिक्षा और ज्ञान का उपयोग समाज की भलाई के लिए करना चाहिए और हमें एक अच्छा नागरिक बनना चाहिए।

इस प्रकार, डॉ. कलाम के आदर्श और विचार न केवल भारतीय युवाओं के लिए बल्कि प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं, जो अपने जीवन में एक अच्छा इंसान बनना चाहता है और समाज के लिए कुछ करना चाहता है।

संदर्भ

1. ब्रूनर जे. ने शैक्षिक मूल्यों के विकास में दर्शन और नैतिकता की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया। उनका मानना था कि यदि शिक्षक नैतिकता का पालन करते हुए विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करते हैं, तो शैक्षिक मूल्यों का सृजन संभव है। इस दृष्टिकोण से, डॉ. कलाम के आदर्श शिक्षा के क्षेत्र में नैतिकता और चरित्र निर्माण के महत्व को दर्शाते हैं।, 1984.
2. डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम की पुस्तक ष्तुम अलग होष् में उन्होंने रचनात्मक नेतृत्व, व्यक्तिगत उत्कृष्टता, और समाज में योगदान देने के महत्व को विस्तार से बताया। उनका मानना था कि हम सभी में महानता होती है, जिसे बाहर लाना हमारी जिम्मेदारी है। इस दृष्टिकोण से उनका जीवन युवाओं को प्रेरित करने का एक शक्तिशाली उदाहरण है।, 2012.
3. विजडम ऑफ कलाम. में डॉ. कलाम के जीवन दर्शन और उनके शैक्षिक विचारों का संग्रह किया गया है। उनके विचारों के अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी प्राप्त करना नहीं, बल्कि साहस, रचनात्मकता, और धार्मिकता के साथ ज्ञान का उपयोग करना है, ताकि समाज में सकारात्मक बदलाव लाया जा सके।, 2013.
4. कलाम ए. पी. जे. ने अपनी आत्मकथा विंग्स ऑफ फायर में यह बताया कि कैसे कठिनाइयों के बावजूद उन्होंने अपने

सपनों को साकार किया और युवाओं को यह प्रेरणा दी कि किसी भी चुनौती से डरने के बजाय उसे अपनाना चाहिए। उनके अनुसार, असफलता सिर्फ एक अस्थायी स्थिति है और सफलता के लिए निरंतर प्रयास की आवश्यकता होती है। यह दृष्टिकोण भारतीय शिक्षा प्रणाली और युवाओं के विकास के लिए प्रेरणास्त्रोत है।, 2007.

5. चंद्रा, ए. ने अपने अध्ययन ष्भारतीय शिक्षा प्रणाली में डॉ. कलाम के योगदान का विश्लेषणष् में बताया कि डॉ. कलाम ने शिक्षा को केवल एक जानकारी का साधन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और समाज सेवा के उपकरण के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने भारतीय युवाओं से अपनी क्षमताओं का उपयोग समाज के भले के लिए करने का आह्वान किया। चंद्रा ने यह भी उल्लेख किया कि कलाम के विचारों ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा के महत्व को और बढ़ाया।, 2015.
6. नायडू, आर. ने डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम एक शैक्षिक नेताष् में यह व्याख्या की है कि कैसे डॉ. कलाम ने भारतीय युवाओं को शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में योगदान देने की प्रेरणा दी। उनका मानना था कि शिक्षा एकमात्र ऐसा साधन है जो एक व्यक्ति को राष्ट्र के प्रति जिम्मेदार नागरिक बना सकता है और यह समाज की प्रगति में सहायक होता है।, 2017.

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.